Input-output theory.

* डेविड ईस्टन पहले प्रमुख राजनीति वैज्ञानिक हैं जिन्होंने विज्ञान या समाजविज्ञान से केवल रूपांतरित मात्र करने के बजाय, राजनीति के अध्ययन के लिये व्यवस्था विश्लेषण उपागम के आधार पर एक क्रमबद्ध ढांचे का विकास किया है।
* उन्होंने राजनीतिक व्यवस्था की परिभाषा अंतः क्रियाओं के समुच्चय के रूप में की है और राजनीति को मूल्यों का प्रमाणीकृत विनिधान करना कहा है।
* ईस्टन के आगत - निर्गत विश्लेषण के तीन मुख्य चर हैं।

(1) मांगें (Demands) - ईस्टन मांग की परिभाषा ऐसे विचार की अभिव्यक्ति के रूप में करते हैं। कि किसी विशेष विषय वस्तु के बारे में प्रमाणीकृत विनिधान उन लोगों के द्वारा किया अथवा नहीं किया जाए जो ऐसा करने के लिए उत्तरदायी हैं।

* इसका अर्थ यह है कि कर्ताओं के रूप में लोग अपनी राजनीतिक व्यवस्था से मांगें करते हैं जो उनके विशिष्ट हितों को पूरा करती हों इस प्रकार राजनीतिक व्यवस्था - मांग - तनाव के अधीन रहती है।
* कई बार परिमाणात्मक आधिक्य (quantitative excess) के कारण, जिसे आयाम तनाव भी कहते हैं। अथवा volume stress

गुणात्मक तत्वों के भार के कारण जिसे Content stress कहते हैं, के कारण तनाव का भार काफी अधिक हो जाता है, बहरहाल दोनों ही स्थितियों में जैसा कि डेविड ईस्टन कहते हैं व्यवस्था में अधिभार

Scanned By Scanner Go

(overload) उत्पन्न हो जाता है।

- राजनीतिक व्यवस्था की संरचनाओं का कार्य ऐसी माँगों को, जिसे सही तौर पर आगत कहा जाता है, प्रमाणीकृत निर्णयों के रूप में, जिसे सही तौर पर निर्गत कहा जाता है, परिवर्तन करना है।
- इस प्रकार यह परिवर्तन प्रक्रिया होती है जिसमें कुछ माँगे पूरी की जाती है और कुछ को निकाल बाहर किया जाता है।

समर्थन (Support) - समर्थन व्यवस्था और उसके पर्यावरण के बीच बचे हुए आगत अन्तः क्रिया को जबकि माँगों को उसमें से कम कर दिया गया हो, निर्देशित करता है।

- ईस्टन 'समर्थन तनाव' की ओर निर्देश करते हैं जो निर्गत असफलता के कारण हो सकता है।

पुनः निवेश (Feedback) पुनः निवेश के विचार का अभिप्राय यह है कि निर्गत के रूप में जो निर्णय लिये गये उसका व्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा, कितना प्रभाव पड़ा?

pol-sc (Hons)
Part - I
paper - II

Rama Kant pandey
A.P (Guest)
S.R.A.P college Bara Chakiya
B.R.A.B.U (muz.)

Scanned By Scanner Go